मस्तानी लौन्डिया-3

“निशु सब सुनते हुए खा रही थी। उसकी जाँघें अभी भी भिंची हुई थी जिससे उसकी चूत की फ़ाँक नहीं दिख रही थी, सिर्फ़ ऊपर के झाँट देख रहे थे। …”

Story By: (sanjchou80)
Posted: Monday, March 5th, 2007
Categories: जवान लड़की
Online version: मस्तानी लौन्डिया-3

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

मस्तानी लौन्डिया-3

नमस्कार दोस्तो, मेरी कहानी को पढ़ कर बहुत लोगों ने मुझे मेल किया और मुझसे निशु के साथ और क्या सब हुआ, वो भेजने की माँग की।

जब एक बार निशु को मुझसे चुदाने का मजा मिल गया तब फ़िर क्या परेशानी होनी थी। हम दोनों उसके बाद खुल कर बेहिचक और बेझिझक एक दूसरे के साथ मस्ती करने लगे।

निशु होस्टल नहीं गई और मेरे साथ ही रहने लगी। पिछले चार महीने में हम दोनों ने सैकड़ों बार चुदाई का खेल खेला। कुछ नया ऐसा न हुआ कि आप सब को बताया जाए। मेरे दोनों दोस्त अनवर और सुमित भी आते तब भी कुछ खास न हुआ।

सुमित को एक नई लड़की मिल गई थी और वो उसके साथ व्यस्त था। अनवर ने भी निशु के साथ सेक्स करने की बात ना की, पर निशु अक्सर कहती कि पता नहीं कब आपके दोस्त लोग मेरे में अपना हिस्सा माँगेंगे। मैं

तब उसे समझाता कि वो ऐसे नहीं हैं, बहुत होगा तो एक दो बार वो तुम्हें कहेंगे पर अगर तुम ना कर दोगी तो वो जिद नहीं करेंगे।

पर अब करीब चार महीने बाद पिछले रविवार को सुबह ही अनवर मेरे घर आया। मैं अखबार पढ़ रहा था और निशु टीवी देख रही थी।
हम दोनों में से चाय कौन बनाए, यह अभी तय नहीं हुआ था। अनवर मेरे पास बैठ गया और इधर-उधर की बात करने लगा। फ़िर सुमित की बात आई कि वो कल रात भी अपनी गर्लफ्रेंड के साथ था।

और तभी अनवर बोला- साले तुम दोनों की चाँदी है, रोज चूत से लण्ड की मालिश करते

हो। अब मैं शादी ही कर लेता हूँ, मेरे साथ भी एक हमेशा रहेगी। आज एक महीना हो गया किसी को चोदे। ब्लू फ़िल्म देख कर मुठ मारता हूँ।

असल में पहले ऐसा नहीं था, तब हम तीनों के साथ कोई रेगुलर न थी। वो अब निशु को देख रहा था, पर कह नहीं पा रहा था।

मैंने निशु को कहा- सुन रही हो ना! कैसा बेचैन है! अब जरा बेचारे को चाय तो पिलाओ!

निशु मुस्कुराते हुए चाय बनाने चली गई।

वो अब मुझसे पूछने लगा- क्या निशु मुझे एक बार चाँस देगी?

मैंने भी कह दिया- खुद ही पूछ कर देख ले!

तभी निशु चाय ले कर आई। वो तब एक ढीली टी-शर्ट और बरमुडा पहने थी। नीचे कोई अन्तर्वस्त्र न था, इसलिए उसकी चुचियाँ चलने से फ़ुदक रही थी।

हम सब जब चाय पीने लगे तब वो बोला- निशु, प्लीज न मत कहना! बहुत मन हो रहा है, एक बार मेरे साथ कर लो ना!

वो एक दम से बोल गया था, सो निशु तुरंत जवाब न दे सकी।

अनवर ने फ़िर से निशु से कहा और तब निशु ने मुझे देखा।

मैंने भी तब कह दिया- मुझे कोई परेशानी नहीं है, अगर तेरा मन है तो हाँ कह दे।

अनवर अब निशु को देखे जा रहा था।

मुझे पता था कि निशु को भी एक बार का मन है कि देखे कि अलग लड़के से चुदवा के कैसा

लगता है, क्योंकि वो अक्सर सेक्स करते समय ये सब बातें करती थी, और जब मैं कहता कि अलग अलग लड़की का स्वाद अलग अलग होता है, तब वो भी जोश में कहती कि वो भी अलग अलग लड़के का मजा लेगी।

निशु थोड़ा सोच कर बोली- ठीक है, जब भैया को एतराज नहीं है, तब एक बार आपके साथ कर लूंगी पर उसके बाद आप भी हमेशा मत कहिएगा। मैंने कई बार सुना है कि एक से करे रानी और बहुत से करे रंडी। आप रुकिए, नाश्ता कर के जाइएगा।

अनवर अब खुशी से चहक उठा- अभी नहीं कुछ, अब बस अभी करना है, उसके बाद ही नाश्ता-वाशता!

और जब तक कोइ कुछ समझे कहे, वो निशु के चेहरे को पकड़ उसके होंठ चूमने लगा।

निशु बस उम-उम कर रही थी, और अनवर उसके होंठों का रसपान कर रहा था।

मैं उसकी यह बेचैनी देख हँस पड़ा और कहा- ठीक है, भाई अब दोनों मस्ती करो, आज मैं नाश्ता ब्रेड-ऑमलेट तैयार करता हूँ, जल्दी तुम लोग खत्म करो ये सब!

अनवर एक बार बोला- थैंक्स!

और तब निशु का भी मुँह फ्री हुआ और वो भी बोली- बाप रे! ऐसी बेचैनी का मुझे अन्दाज न था।

अनवर यह कहते हुए कि हाँ आज वह बहुत बेचैन है, एक बार फ़िर निशु से लिपट गया।

मैं अब वहाँ से उठ गया था, पर मुझे पता था कि अनवर को इस बात से कोई फ़र्क नहीं पड़ता, हम सभी दोस्त एक दूसरे के सामने पहले दो-चार बार भाड़े की लड़की यानि काल-गर्ल चोद चुके हैं।

मुझे निशु के मुँह से निकल रही सेक्सी आवाजें सुनाई दे रही थी। मुझे पता था कि अभी अनवर उसकी चूत को चूस रहा होगा।
हम तीनों में अनवर के चूसने की कला हमेशा ही लड़कियों को भाती रही है।

करीब 40-45 मिनट बाद मैं 10 स्लाईस ब्रेड और 3 ऑमलेट ले कर कमरे में आया। कमरे में आवाजें थोड़ी कम ही थी तो मुझे लगा कि अन्तर्वासना, बेचैनी के कारण अनवर एक बार फ़टाफ़ट चुदाई कर चुका होगा।

अब मेरे मन में भी था कि देखूँ कि निशु कैसे चुदवाती है। कम से कम अंत भी तो मैं देख सकता था।

पर जब कमरे में घुसा तब देखा कि अभी तो असल चुदाई शुरु भी नहीं हुई है। अनवर नीचे कालीन पर लेटा है और निशु उसके लण्ड को चूस रही है।

दोनों मादरजात नंगे थे। मेरी तरफ़ निशु की गाण्ड थी और वो झुकी हुई थी इसलिए उसकी गीली, गुलाबी चूत की धारी थोड़ी खुली हुई दिख रही थी।

मुझे भीतर आते देख निशु उठ गई और एक तरफ़ सिमट कर अपने दोनों जाँघों को भींच लिया तथा अपने हाथों से अपने चूचियों को ढकने लगी।

अनवर का 7′ का लण्ड अपने पूरे शवाब पर था। उसकी लाल सुपारी और सुडौलपन देखने लायक था। अनवर को तब पता नहीं चला कि मैं कमरे में आया हूँ।

वो बोला- आओ निशु जरा एक बार चूस कर मेरा झाड़ दो, उसके बाद चुदाई करुँगा। सिर्फ़ लण्ड चूसाने के लिए हीं मैं अपना झाँट साफ़ रखता हूँ ताकि किसी लड़की को इन बालों से परेशानी ना हो।

अब तक वो मुझे देख कर समझ गया कि निशु क्यों उसके लण्ड से हट गई है।

मुझे भी निशु का इस तरह मुझसे शर्माना अच्छा लगा। साफ़ था कि अभी भी निशु दिल्ली की आम लड़की की तरह राँड नहीं हुई थी, छोटे शहर के संस्कार अभी बाकी थे।

मैंने बात शुरु की- आओ अब पहले नाश्ता कर लो उसके बाद ये सब करना।

अनवर उठते हुए बोला- क्या साला! के एल पी डी हो गया, थोड़ा रुके क्यों नहीं संजीव यार?

मैंने हँस कर कहा- बहुत दिन बाद हुआ ऐसा के एल पी डी!

और तब वो भी हँसने लगा।

मैंने निशु को भी कहा- आ जाओ, अब तुम भी नाश्ता कर लो, फ़िर कर लेना ये सब।

अनवर ने उसका हाथ पकड़ कर उसे उठा दिया और फ़िर दोनों मेरे दाहिनी तरफ़ सोफ़े पर बैठ गये। निशु मेरे से दूर वाली तरफ़ थी।

अनवर ने अपने लण्ड को एक चपत लगाया और बोला- ले साले! के एल पी डी!

फ़िर निशु से बोला- समझी कुछ?

जब निशु ने न में सर हिलाया तब वो उसको समझा कर बोला- के एल पी डी माने- खड़े लण्ड पे धोखा!
अब यह सुन कर निशु भी मुस्कुराने लगी।

मैंने खाना शुरु कर दिया। निशु ने अपनी टी-शर्ट गोदी में रख ली जिससे उसकी चूत छुप

जाए और एक स्लाईस उठा लिया।

अनवर ने भी खाना शुरु किया पर अपना हाथ बढ़ा उस कपड़े को निशु की गोदी से हटा दिया- मेरा के एल पी डी और तू शरमा रही है ? यह नहीं चलेगा।

मुझे निशु का इस तरह शर्माना भा रहा था, सो मैंने भी थोड़ा कह दिया- यार अनवर, वो अपने भैया के सामने बैठी है, और अपनी एक आँख मारी।

अनवर खाते हुए बोला- चुप साले बहनचोद, रोज़ चोदते हो, गन्दी-गन्दी बात करते हो और अभी मेरे समय समझा रहे हो कि भैया के सामने बैठी है। जवानी का मजा लूटने दो साली निशु को !

मेरा अब मन कर रहा था कि मैं निशु को अनवर से चुदवाते देखूँ, सो मैं बोला- अबे साले भड़को मत, दो मजा उसको। मैं मना थोड़े कर रहा हूँ ?

फ़िर मैंने निशु से कहा- हाँ निशु, बिल्कुल बिंदास हो कर लो मजा। अनवर लड़की की चूत खाने में माहिर है, साला 15 साल का था तब अपनी बुड्डी मामी की चूत चूसकर ही जवान हुआ। सौ से कम लड़कियाँ नहीं चोदी होंगी इसने, आज देखो कैसे बेचैन है।

अनवर ने हँस कर कहा- अरे 38-40 की थी मामी यार ! ऐसी बूढ़ी नहीं थी।

मैंने भी कहा- अबे साले ! निशु ने 19 भी पूरे नहीं किए हैं अभी !

निशु सब सुनते हुए खा रही थी। उसकी जाँघें अभी भी भिंची हुई थी जिससे उसकी चूत की फ़ाँक नहीं दिख रही थी, सिर्फ़ ऊपर के झाँट देख रहे थे।

यहाँ मैं आप लोगों को बता दूँ कि निशु के चूत और काँख पर खूब बाल हैं। (मैंने ये सब मस्तानी लौन्डिया में पहले लिखा था)

नाश्ता खत्म हुआ तब अनवर का लण्ड अपना आधा जोश खो चुका था, अनवर बोला- अब जल्दी से हाथ धो कर आ जाओ, तुमको फ़िर से मेरा लण्ड मस्त करना होगा, तभी सही मजा मिलेगा तुमको !

निशु सब प्लेट वगैरह ले कर बाहर निकल गई, तब मैंने अनवर से कहा- मैं सब देखना चाहता हूँ, पता नहीं निशु मानेगी या नहीं ? देख नहीं रहे मेरे सामने कैसे चुप-चुप थी।

अनवर बोला- चिंता नहीं दोस्त, आज तुमको सब दिखेगा, साली को ऐसा मस्त कर दूंगा कि चौक पर पूरी दुनिया के सामने चुदवा लेगी, यहाँ तो बस तुम ही हो। बहुत मस्त लौन्डिया है निशु, इतना तो मुझे अभी तक समझ आ गया है। जब चुदेगी तब बिन्दास चुदेगी।

तभी निशु आ गई। उसने एक तौलिए को अपने वक्ष पर लपेट लिया था, जो उसकी आधी जाँघ भी ढ़के हुए था। अनवर फ़िर पहले की तरह काकीन पर लेट गया और लण्ड हाथ में ले हिला कर निशु को आने का न्योता दिया।

निशु भी पास बैठ तो गई पर सर नीचे किये हुए शायद मेरे जाने का इन्तजार करने लगी।

तभी अनवर सब भाँप बोला- आ निशु डीयर, देख तेरा खिलौना, तेरा लॉलीपॉप तेरे मुँह में जाने के लिए बेकरार है। अपने भैया की फ़िक्र छोड़ो और मस्ती करो।

मैंने भी निशु की हिम्मत बढ़ाई यह कहते हुए कि मैंने तुमको कई बार चोदा, पर आज तुमको किसी और से चुदवाते देखना चाहता हूँ !
उसके बदन से तौलिया खींच दिया। फ़िर मैंने उसकी दोनों चूचियों को मसल दिया और फ़िर वहीं सोफ़े पर निशु के बिल्कुल सामने बैठ गया।

अनवर ने निशु को अपने ऊपर खींच लिया और निशु को अपने पूरे बदन पर फ़ैला कर उसके

होंठ चूसने शुरु कर दिये।

निशु अब भी अपने दोनों टाँगों को सटाए हुइ थी, उन दोनों के सर मेरी ओर थे। निशु की छाती अनवर के सीने पे दबी हुई थी।

अनवर अब निशु को वैसे ही चिपटाये हुए पलट गया और निशु अब उसके नीचे हो गई। वो अब उसके चुम्मे का जवाब देने लगी थी।

अनवर 2-3 मिनट के बाद हटा और फ़िर उसकी दाहिनी चूची को चूसने लगा। वह अपने एक हाथ से उसकी बाँई चूची को हल्के से मसल भी रहा था।

निशु की आँखें बन्द थी और उसकी साँस गहरी हो चली थी। जल्द ही निशु अपने पैर को हल्के हल्के हिलाने, आपसे में रगड़ने लगी। उसकी चूत गीली होने लगी थी।

जैसे ही उसने एक सिसकारी भरी, अनवर उसके ऊपर से पूरी तरह हट गया और मुझे उसके पैरों की तरफ़ जाने का इशारा किया। मैं अब निशु की सर की तरफ़ से हट कर उसके पैरों की तरफ़ हो गया।

अनवर अब उसकी चूत पर झुका। होठों के बीच उसकी झाँटों को ले कर दो-चार बार हलके से खींचा और फ़िर उसकी जाँघ खोल दी।
उसकी चूत की फ़ाँक खुद के पानी से गीली हो कर चमक रही थी। अनवर अपने स्टाईल में जल्द ही चूत चूसने लगा और निशु के मुँह से आआअह आआअह ऊऊऊऊऊओह जैसी आवाज ही निकल रही थी।

अनवर चूसता रहा और निशु चरम सुख पा सिसक सिसक कर, काँप काँप कर हम लोगों को बता रही थी कि उसको आज पूरी मस्ती का मजा मिल रहा है।

जल्द ही वो निढ़ाल हो कर थोड़ा शान्त हो गई।

तब अनवर ने उसको कहा कि अब वो उसके लण्ड को चूस कर उसको एक पानी झाड़े। निशु शान्त पड़ी रही, पर अनवर उसके बदन को हलके हलके सहला कर होश में लाया और फ़िर उसको लण्ड चूसने को कहा।

निशु एक प्यारी से अदा के साथ उठी और फ़िर अनवर के लण्ड को अपने मुँह में ले लिया। वो अब मुझसे बिना शर्म किए खूब मजे लेने के मूड में थी। कभी हाथ से वो मुठ मारती, कभी चूसती और जल्द ही अनवर का लण्ड फ़ुफ़कारने लगा, फ़िर झड़ भी गया।

झड़ते समय अनवर ने पूछा- क्या वो माल खाएगी ?

पर निशु ने ना में सर हिला दिया, तब अनवर तुरंत उठा और सारा माल निशु की चूची पर निकाल दिया।

झड़ने के बाद भी अनवर का लण्ड हल्का सा ही ढीला हुआ था, जिसको उसने अपने हथेली से पौंछ दिया और फ़िर निशु को कहा- अब इसको चूस कर फ़िर से तैयार कर !

निशु बोली- पानी से धो लीजिए ना थोड़ा, ऐसे तो सब मेरे मुँह में चला जाएगा !

मुझे पता था कि निशु ने अभी तक लण्ड के माल को चखा नहीं है। मैं सोच रहा था कि आज निशु को मर्द के माल का स्वाद मिल जाए तो मुझे भी मजा आएगा।

अनवर ने उसके अनुरोध की बिना परवाह किए कहा- चल आ जा अब, देर ना कर ! नहीं तो अगली बार माल तेरी बुर में निकाल दूँगा !

फ़िर मेरी तरफ़ देख बोला- क्या यार बहन को अभी तक बताया नहीं कि मर्द का माल लौंडिया के लिये कैसा टौनिक है ?

मैंने भी जड़ दिया- हाँ यार, यह साली बहन जी की बहन जी ही रहेगी, देख नहीं रहे हो आज तक झाँट भी साफ़ नहीं की, जबकि कई बार मैंने कहा भी कि मैं शेव कर दूँगा, पर देख लो ! कहती है कि मम्मी कहती है कि कुँवारी लड़की को ये बाल नहीं साफ़ करना चाहिएँ, नहीं तो मर्द समझेगा कि बीवी अन्छुई नहीं है।

अनवर हँसने लगा- अब तक निशु अपने को कुँवारी समझ रही है, कमाल है ? क्या इसकी माँ, जब यह घर जाएगी, तब इसको नंगा करके देखेगी ?

और उसने अब निशु को नीचे लिटा दिया। फ़िर उसकी टाँगों को पेट की तरफ़ मोड़ दिया, खुद अपने फ़नफ़नाए लण्ड के साथ बिल्कुल उसकी खुली हुई बुर के पास घुटने पर बैठ गया। हल्के हल्के से लण्ड अब उसकी बुर के मुहाने पे दस्तक देने लगा था।

निशु अपनी आँख बन्द करके अपने बुर के भीतर घुसने वाले लण्ड का इन्तजार कर रही थी।

अनवर ने अपने लण्ड को अपने बाँए हाथ से उसकी बुर पर टिकाया और फ़िर उसको धीरे धीरे भीतर पेलने लगा।
निशु के मुँह से सिसकारी निकल गई और जब लण्ड आधा भीतर घुस गया, तब अनवर ने अपने वजन को बैंलेन्स करके एक जोर का धक्का लगाया और पूरा 7′ भीतर पेल दिया।

निशु हल्के से चीखी- उई ई ईईई ईईईए स्स्स्स्स् स माँ आआआह !

और निशु की चुदाई शुरु हो गई। जल्द ही वह भी अपनी बुर को अनवर के लण्ड के साथ 'ताल से ताल मिला' के अन्दाज में हिला हिला कर मस्त आवाज निकाल निकाल कर चुद रही थी।
साथ ही बोले जा रही थी- आह चोदो ! वाह, मजा आ रहा है, और चोदो, जोर से चोदो, लूटो मजा मेरी बुर का, मेरी चूत का, बहुत मजा आ रहा है, खूब चोदो ! खूब चोदो !

फ़िर जब अनवर ने चुदाई की रफ़्तार बढ़ाई, निशु के मुँह से गालियाँ भी निकलने लगी- आआह मादरचोद ! ऊऊ ऊ ऊओह बहनचोद ! साले चोद जोर से चोदो रे साले मादरचोद।

अनवर भी मस्त हो रहा था, यह सब सुन सुन कर मस्ती में चोदे जा रहा था और निशु की गाली का जवाब गाली से दे रहा था- ले चुद साली, बहुत फ़ड़क रही थी, देख आज कैसे बुर फ़ाड़ता हूँ। साली कुतिया, आज लण्ड से तेरी बच्चादानी हिला के चोद दूँगा। साली बेटी पैदा करके उसको भी तेरे सामने चोदूँगा इसी लण्ड से ! देखना तू !

दोनों एक दूसरे को खूब गन्दी गन्दी गाली दे रहे थे और चुदाई चालू थी।

थोड़ी देर बाद अनवर थक गया शायद, और उसने अब लण्ड बाहर निकाल लिया। तब निशु ने उसको लिटा दिया और उसके ऊपर चढ़ गई। वो अब ऊपर से उसके लण्ड पर कुद रही थी और मैं उसके सामने होकर देख रहा था कि कैसे लण्ड को उसकी बुर लील रही थी।

4-5 मिनट बाद अनवर फ़िर उठने लगा और फ़िर निशु को पलट कर उसको घुटनों और हाथों पर कर दिया फ़िर पीछे से उसकी बुर में पेल दिया, बोला- अब बन गई ना निशु तू कुतिया ! साली चुद और चुद साली ! मम्मी को अपना झाँट दिखा के बेवकूफ़ बना और यहाँ लण्ड खा गपागप गपागप गपागप। मादरचोद ! भैया से चुदी, अब भतार से चुद चुद साली रन्डी। एक से चुदे बीवी, दो से चुदे कौन, बोल रन्डी, बोल साली कुतिया, बोल दो से चुदे कौन ?

और वो बोल पड़ी- रन्डी रन्डी, साले बहनचोद तुम लोगों ने मुझे रन्डी बना दिया।

अनवर अब एक बार फ़िर लण्ड बाहर निकाल लिया और फ़िर उसको सीधा लिटा दिया। ऊपर से एक बार फ़िर चुदाई शुरु कर दी।

वो बोले जा रहा था- रन्डी,रन्डी, निशु कौन, निशु कौन ?

निशु बोलती- निशु है रन्डी, निशु है रन्डी।

और करीब 30 मिनट के बाद निशु एक बार फ़िर काँपने लगी, वो फ़िर एक बार झर रही थी। तभी अनवर भी झरा- एक जोर का आआआआह और फ़िर पिचकारी निशु की झाँट पे। सारा सफ़ेद माल काली काली झाँटों पर फ़ैल गया।

दोनों निढ़ाल हो कर अब एक दम शान्त हो कर एक दूसरे के बगल में लेट कर शन्त हो गये। मेरा लण्ड भी यह सब देख अपना माल मेरी पैंट में निकाल चुका था। अब एक दम शान्ति थी।

करीब 5 मिनट तक वैसे ही रहने के बाद निशु उठी और अपने कपड़े ले कर बाथरुम में चली गई। अनवर भी अपने कपड़े पहनने लगा- यार बहुत मस्त माल है ये, थैंक्स!

मैंने कहा- हाँ यार, पर अब उसको परेशान नहीं करना, या चिढ़ाना मत।

अनवर बोला- क्या दोस्त, अभी तक तुझे लगता है कि मैं ऐसा कमीना हूँ? यार मुझे पता है कि लड़की को कैसे इज्जत देनी चाहिए।

निशु तब तक आ गई थी और बात भी सुनी थी, अनवर भी उसको बोला- हाँ, निशु तुम बिल्कुल दिल पर न लेना कोई बात। यह सब बस करते समय की बात है, जो भी मैं बोला! अब आगे से जैसा पहले था, वैसा ही रिश्ता रहेगा हम लोगों का!

निशु ने मुस्कुराते हुए कहा- मुझे पता है अनवर भैया, मैं चाय बनाती हूँ।

वो बाहर निकल गई, और हम दोनों दोस्त टीवी खोल कर बैठ इधर-उधर की बातें करते हुए चाय का इन्तज़ार करने लगे।

आपको यह कहानी कैसी लगी, बताना साथ ही यह भी बताना कि मुझे सिर्फ़ निशु के साथ

किये गये मजे के बारे में लिखना चाहिए या कुछ और भी लिखना चाहिए ?

वैसे अनवर के बारे में दो-चार बात है मजेदार बताने के लिए !

sanjchou80@yahoo.com

Other stories you may be interested in

पांच सहेलियाँ अन्तरंग हो गयी

दोस्तो, आज बहुत दिनों बाद आपसे कुछ यादें शेयर करना चाहता हूँ. मेरी पिछली कहानी थी शादीशुदा लड़की का कुंवारी सहेली से प्यार आज की मेरी कहानी देहरादून में बन रहे पॉवर प्रोजेक्ट के इंजीनियरों की है. ये पांच इंजीनियर […]
Full Story >>>

यार से मिलन की चाह में तीन लंड खा लिए-5

पिछले भाग में आपने पढ़ा कि लॉज का मैनेजर मेरी चूत को पेल रहा था और जीजा सामने कुर्सी पर बैठे हुए अपना लंड हिला रहे थे. लॉज के नौकर ने मेरे मुंह में लंड दे रखा था. जीजा को […]
Full Story >>>

क्लासमेट की मां चोद दी

बात तब की है जब मैं और कुलजीत कक्षा 12 में पढ़ते थे. कुलजीत की अभी दाढ़ी नहीं निकली थी. चिकना और गोल मटोल था. चूतड़ ऐसे कि गांड मारने को उत्तेजित करते थे. वह मेरे घर के पीछे वाली […]
Full Story >>>

ममेरे भाई ने मेरी कुंवारी चूत की चुदाई की-1

दोस्तो, मेरा नाम आशना है. मैं अहमदाबाद में रहती हूँ. आज जब मैं संसार की सबसे ज्यादा पढ़ी जाने वाली हिंदी में सेक्स कहानी वाली अन्तर्वासना की साइट पर सेक्स स्टोरी पढ़ रही थी. तब मुझे लगा कि मुझे भी […]
Full Story >>>

बहन बनी सेक्स गुलाम-5

दोस्तो, मेरी इस सेक्स कहानी को आप लोगों का बहुत प्यार मिला. मैं फिर से आपका सबका धन्यवाद करना चाहता हूँ और नए अंक के प्रकाशन में देरी के लिए क्षमा चाहता हूँ. कहानी थोड़ी लंबी हो रही है क्योंकि […]
Full Story >>>